प्रातःक्लास 17/7/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः बागवान बाप बैठ अपने फूलों को समझाते हैं। देखते हैं, सैर करते हैं; क्योंकि और सभी जगह तो फूल और माली होते हैं। यहाँ तो तुम बागवान पास आते हो अपने खुशबूएँ देने। तुम फूल हो ना। तुम भी जानते हो बाप भी जानते हैं। कांटों के जंगल के बीजरूप है रावण। यूँ तो सारे झाड़ का बीज एक ही है; परन्तु फूलों के बगीचे से फिर कांटों का जंगल बन जाता है तो जंगल बनाने वाला भी जरूर होगा ना। वह है रावण। तुम जज करो बाप ठीक समझाते हैं। देवताओं रूपी फूलों के बगीचे का बीजरूप है बाप। तुम अभी देवी–देवताएँ फूल बन रहे हो। यह तो हरेक जानते हैं हम किस किसम का फूल हैं। बागवान भी यहाँ आते हैं फूलों को देखने। वह तो सभी हैं माली। उसमें भी अनेक प्रकार के माली हैं। उस बगीचे के भी भिन्न2 प्रकार के माली होते हैं। कोई की 60 रुपया वेतन, कोई की 100 रुपया, कोई का 200 रुपया भी होते हैं। जैसे मोगल गार्डेन का माली जरूर बहुत होशियार होगा। 250–300 पधार होगा। यह तो बहुत बड़ा बेहद का बगीचा है। इसमें भी अनेक प्रकार के नम्बरवार माली हैं। जो बहुत अच्छे माली होते हैं वह बगीचे को अच्छा शोभनिक बना देते हैं। अच्छे में अच्छे फूल लगाते हैं। गवर्मेन्ट हाउस, मोगल गार्डेन कितना अच्छा है। यह है बेहद का बगीचा। एक है बागवान। उस कांटों के जंगल का भी एक बीज है रावण। और फूलों के बगीचे का भी एक बीज है शिवबाबा। वरसा मिलता है बाप से। रावण से वरसा नहीं मिलता। वह तो जैसे सराप देते हैं। सरापित होते हैं। तो फिर जो सुख देने वाला है उनको सभी याद करते हैं; क्योंकि वह है सुखदाता। वह है सुख देने वाला। तो बागवान आते हैं तो जरूर माली सहित आवेंगे। माली भी भिन्न2 प्रकार के हैं। बागवान आकर मालियों को भी देखते हैं। कैसे छोटा2 बगीचा बना हुआ है, कौन2 सी फूल है, वह भी ख्याल में लाते हैं। कब2 बहुत अच्छे2 माली भी आते हैं। उन्हों की फूलों की सजावट भी अक्सर करके अच्छे2 आ जाते हैं तो बागवान को जास्ती खुशी रहती है। ओ ओ यह माली तो ..... अच्छा है फूल भी अच्छे2 लाये हैं। यह है बेहद का बात। वह है कांटों का जंगल। जिसका बीज है रावण। तुम बच्चों के दिल में है बाबा बिल्कुल सच कहते हैं। आधा कल्प चलता है रावण राज्य। फूलों के बगीचे को कांटों का जंगल बना देती है रावण। जंगल में कांटे ही कांटे होते हैं। बहुत दुख उठाते हैं। बग़ीचे के बीच कांटा थोड़े ही होता है। एक भी नहीं। बच्चे जानते हैं रावण देहअभिमान में लाती है। बड़े ते बड़े कांटा है देह अभिमान का। बाबा ने रात्रि को भी समझाया किन्हों की दृष्टि कामी रहती है। ..... कामी दृष्टि है। वैश्याएँ, लम्पट भी हैं ना। यह है सबसे बड़े कांटे। इसमें भी कोई खास कांटे रखते हैं। जिनको कामी कुत्ता भी कहा जाता है। बड़ा2 घर खास उन्हों के लिए बनाते हैं। जैसे कलकत्ता है। वहाँ दूसरे वैश्या न रखे तो उनको बड़ा आदमी नहीं माना जाये। बहुत गन्द है। इसलिए भारत का नाम ही रखा हुआ है वैश्यालय। खास भी है आम भी है। कामन और अनकामन होते हैं ना। खास अपने लिए रखते हैं, फिर खुद भी जाते हैं, दोस्तों को भी ले जाते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं यह है वैश्यालय जो विकार में जाते हैं या चेष्ट करते हैं, यह फलाना बहुत अच्छा है। इनसे विकार में जावें। वैश्याओं का यह काम होता है। कब कब यहाँ भी ऐसे आते हैं। बुद्धि देह तरफ जाती है। कोई की सेमी बुद्धि जाती है। कोई नये2 भी आते हैं बड़ा अच्छा पहले चलते हैं, समझते हैं (कि) विकार में कभी नहीं जावेंगे, पवित्र रहेंगे। उस समय मसानी वैराग्य आता है। फिर वहाँ जंगल में जाते हैं तो खराब हो पड़ते हैं। दृष्टि गंदी हो जाती है। यहाँ जिनको अच्छा2 फूल समझ बागवान पास ले आते हैं बाबा यह बहुत अच्छा फूल है। कोई के लिए कान में बताते हैं यह फलाना फूल है। यह ऐसा है। माला तो जरूर बतावेंगे ना। ऐसे नहीं कि बाबा अन्तर्यामी है नहीं। माली हरेक के चाल–चलन बताते हैं। बाबा इनकी दृष्टि अच्छी नहीं है। इनकी चलन रायल नहीं है। यह 10% सुधरे हैं। इनकी 20% सुधरी है। मूल है आँख जो बहुत धोखा देती है। माली आकर बागवान को सभी को कुछ बतावेंगे ना। बाबा एक–एक से पूछते हैं बताओ तुमने कैसे2 फूल लाये हैं। कोई गुलाब के फूल होते हैं कोई मातिये की। कोई अक भी

ले आते हैं। यहाँ बहुत खबरदार रहते हैं। जंगल में जाते हैं तो फिर फूल मुरझाये जाते हैं। देखते हैं यह इस प्रकार का फूल है। माया भी ऐसी है जो मालियों को भी बड़ा जोर से थप्पर लगा देती है जो माली भी कांटे बन पड़ते हैं। बाग़वान आते हैं तो पहले2 बगीचे को देखते हैं। फिर बैठ उनको श्रृंगारते हैं। बच्चे खबरदार रहो। खामियाँ निकालते जाओ। नहीं तो फिर बहुत पछतावेंगे। बाबा आया है यह बनाने। इनके बदली हम घाटे बने। अपनी जांच की जाती है हम ऐसा ऊँच बनने लायक हैं। यह तो जानते हो कांटों के जंगल का बीज रावण है। फूलों के बगीचे का बीच है राम। यह सभी बातें बाप बैठ सुनाते हैं। भक्तिमार्ग में जो भी बातें सुनते हैं वह सभी गिरने की ही सुनाते हैं। बाबा फिर भी स्कूल ही(की) पढ़ाई की सराह करते हैं। वह पढ़ाई फिर भी अच्छी है; क्योंकि उनमें सोर्स आफ इनकम है। एमआबजेक्ट भी है। यह भी पाठशाला है। इनकी एमआबजेक्ट है यह बनने की। और कहाँ भी यह एम आबजेक्ट होती नहीं। तुम्हारी एक ही एम है नर से नारायण बनने की। भक्तिमार्ग में सत्य नारायण की कथा बहुत2 सुनते हैं। हर मास में वाभन(वामन) को मंगाते हैं। ब्राह्मण लोग गीता सुनाते हैं। आजकल तो गीता सभी सुनाते हैं। सच्चा2 ब्राह्मण तो कोई है नहीं। तुम हो सच्चे ब्राह्मण। सच्चे बाप के बच्चे हो। तुम सच्ची2 कथा सुनाते हो। सत्य नारायण की कथा भी है। तीजरी की कथा भी है। बाप समझाते हैं झूठे ब्राह्मणों की कथा तो बहुत सुनी उनमें सभी ग्लानी ही ग्लानी है। उनमें भी मुख्य है गीता। भगवानुवाचः मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। वह लोग गीता तो सुनाते आये हैं फिर कौन राजा बना? ऐसा कोई है जो कहे मैं तुमको राजाओं का राजा बनाऊँगा। मैं खुद नहीं बनूँगा। ऐसा कब सुना? यह एक ही बाप है तो बच्चों को बैठ समझाते हैं। बच्चे जानते हैं यहाँ बागवान पास रिफ्रेश होने आते हैं। माली भी बनते हैं। फूल भी बनते हैं। माली तो जरूर बनना है। किसम2 के माली हैं। सर्विस न करेंगे तो अच्छा फूल कैसे बनेंगे। हरेक अपने दिल से पूछे मैं कि(स) प्रकार का फूल हूँ। किस प्रकार का माली बना हूँ। बच्चों को विचार–सागर–मंथन करना पड़े। ब्राह्मणियाँ जानती हैं। माली भी किसम2 के होते हैं। कोई अच्छे2 माली भी आ जाते हैं। जिनका बड़ा अच्छा2 बगीचा होता है। जैसा अच्छा माली तो बगीचा भी अच्छा बनाते हैं। अच्छे2 फूल ले आते हैं। जो देखकर ही दिल खुश हो जाती। कोई हल्के2 फूल ले आते हैं। बाग़वान समझ जाते हैं यह क्या2 पद पावेंगे। अभी तो टाइम पड़ा है। एक एक कांटो को फूल बनाना मेहनत लगता है। कोई तो फूल बनने चाहते ही नहीं। कांटा ही पसन्द करते हैं। आँखों की वृत्ति बहुत गन्दी रहती है। यहाँ आते हैं तो भी उनसे खुशबूएँ नहीं आती। बागवान भी चाहते हैं मेरे आगे फूल बैठे तो अच्छा है। जिनको दुख(देख) खुश होता हूँ। देखता हूँ इनकी वृत्ति ऐसी है तो उस पर नज़र भी नहीं डालते हैं। इसलिए एक–एक को देखते हैं। यह मेरे फूल किस प्रकार के हैं। कितने खुशबूएँ देते हैं। कितना कांटों को फूल बनाते हैं। बने हैं वा नहीं। हरेक खुद भी समझ सकते हैं। हम कहाँ तक फूल बने हैं। पुरुषार्थ करते हैं। घड़ी2 कहते हैं बाबा हम आपको भूल जाते हैं। योग में ठहर नहीं सकते हैं। अरे याद न करेंगे तो फूल कैसे बनेंगे। याद करो, पाप कटे तब फूल बने। फूल बनकर फिर औरों को भी फूल बनावेंगे तब माली नाम रख सकते हैं। बाबा मालियों की मांगनी करते रहते हैं। है कोई माली। क्यों नहीं माली बन सकते हैं। बन्धन तो छोड़ना चाहिए ना। अन्दर में जुट आना चाहिए। सर्विस का उल्लास रहना चाहिए। अपने पर आजा करने लिए मेहनत चाहिए। जिनमें बहुत प्यार है उनको छोड़ना होता है बा पके सर्विस के लिए। जब तक फूल बने नहीं और औरों को नहीं बनाया है तो ऊँच पद कैसे पावेंगे। 21 जन्मों के लिए ऊँच ते ऊँच पद है। महाराजा है, राजाएँ हैं, बड़े2 साहुकार भी हैं। फिर नम्बरवार कम साहुकार भी हैं। प्रजा भी है। अभी हम क्या बने। जो अभी पुरुषार्थ करेंगे वही कल्प–कल्पान्तर बनेंगे। अभी पूरा जोर देकर पुरुषार्थ करना पड़े। नर से ना0 बनना चाहिए। जो अच्छे पुरुषार्थी होंगे वह अमल करेंगे। रोज के आमदनी और घाटे को देखना होता है। 12 मास वा मास की बात नहीं। रोज अपना घाटा और फायदा निकालना चाहिए। घाटा

डालना न चाहिए। नहीं तो थर्ड क्लास बन पड़ेंगे। स्कूल में भी नम्बरवार तो होते हैं ना। मीठे2 बच्चे जानते हैं हमारा बीज है वृक्षपति जिसके आने से हम पर बृहस्पत की दशा बैठती है। फिर रावण आता है तो राहू की दशा बैठता है। वह एकदम हाइएस्ट वह एकदम लोयेस्ट। एकदम शिवालय से वैश्यालय बना देते हैं। अभी तुम बच्चों पर शिवबाबा की बृहस्पत की दशा है। पहले नया वृक्ष होता है फिर आधा से पुराना शुरू होता है। वैश्यालय कांटों के जंगल को कहा जाता। अभी यहाँ तुम आये हो फूल बनने। यहाँ माली भी हैं, बागवान भी हैं। माली भी वृद्धि को पाते रहते हैं। बागवान पास ले आते हैं। बागवान बाप तो जाता नहीं है। तो जरूर यहाँ आना पड़े। हरेक मालीफूल ले आते हैं। कोई2 बड़े अच्छे फूल ले आते हैं। तरफते हैं बाबा पास जावें। कैसी2 युक्ति से बच्चियाँ आती हैं। बाबा कहते हैं बड़ा अच्छा फूल लाया है। भल माली सेकण्ड क्लास है। माली से भी फूल अच्छे हो जाते हैं। तरफते हैं। बस बाबा पास जावें। जो बाबा हमारा इतना ऊँच विश्व का मालिक बनाते हैं। घर में मार खाते हैं तो भी कहते हैं शिवबाबा हमारी रक्षा करो। उनको ही सच्ची द्रौपदी कहा जाता है। पास्ट जो हो गया है सो फिर रिपीट होना है। कल पुकारा था ना। आज बाबा आये हैं बचाने लिए। युक्ति बताते हैं ऐसे2 भूँ करो। तुम हो ब्राह्मणी। वह पति है कीड़ा। उन पर भूँ करते रहो। बोलो, भगवानुवाच है काम महाशत्रु है। उनको जीतने से तुम विश्व का मालिक बनेंगे। कोई न कोई समय अबलाओं के वाक्य लग जाते हैं। तो फिर ठण्डे हो जाते हैं। कहते हैं अच्छा भल जाओ ऐसा बनाने वाले बाप के पास। मेरे तकदीर में नहीं है। तुम तो जाओ। ऐसे बहुत द्रौपदियाँ पुकारती हैं। बाबा लिखते हैं भूँ2 करो। कोई स्त्रियाँ भी ऐसी होती हैं जिनको (शूर्पणखा), पूतना कहा जाता है। फिर पुरुष उनको भूँ2 करते हैं। वह कीड़ा बन पड़ते हैं। विकार बिगर रह नहीं सकती हैं। दुशासन निर्विकारी और द्रौपदियाँ विकारी पूतना बन पड़ती हैं। ऐसे भी होते हैं। बागवान पास सभी किसम के हैं ना। बात मत पूछो। कोई2 कन्याएँ भी कांटा बन जाती हैं। दूसरे से दिल लगी तो फिर उनसे खराब हो पड़ती हैं। बहुत केस आते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं अपनी जन्मपत्री बताओ। बाप को सुनावेंगे नहीं तो वह वृद्धि को पाती जावेगी। झूठ चल न सके। तुम्हारी वृत्ति खराब हो ती हो जावेगी। बाप को सुनाने से कुछ गुम हो जावेगा। सच बताना चाहिए। नहीं तो बिल्कुल महारोगी बन जावेंगे। कोई कहते हैं पति मर गया है फिर भी दृष्टि दूसरी तरफ जाती है। चाचा मिला, मामा मिला, गुरु मिला, जो आया उनसे काला मुँह कर देते। वा चेष्टा रखते हैं। जिसको बाबा सेमी कहते हैं। बाबा कहते हैं विकारी जो बनते हैं उनका काला होता है। कृष्ण को भी श्याम सुन्दर कहते हैं ना। पतित माना ही काला मुँह। नम्बरवन का ही नाम लिया जाता है। नारायण को श्याम सुन्दर नहीं कहते। कृष्ण को कह देते हैं। वही सुन्दर था। फिर काम चिक्षा पर बैठ श्याम, काला बन गया। इसलिए कृष्ण को काला बना दिया है, राम को भी काला, नारायण को भी काला दिखाते हैं। तुम्हारे पास ना0 का चित्र गोरा है। तुम्हारी तो एमआबजेक्ट है। काला थोड़े ही देंगे। तुमको काला ना0 थोड़े ही बनना है। इसलिए यह सुन्दर बनाये हुए हैं। जैसे थे। विकार में गिरने से ही फिर काला मुँह हो जाता है। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। काला मुँह करते2 अभी कितने काले बन पड़े हैं। अन्दर आत्मा ही काली बन पड़ी है। आयरनएजेड है ना। तुमको अभी गोल्डेन एज में जाना है। सोने की चिड़ियाँ बनना है। काली कलकत्ते वाली कहते हैं ना। कितनी भयंकर सिकल उनकी दिखाई है। बात मत पूछो। कितने का शीश काटा है। कितनी भयानक दिखाते हैं। बाप कहते हैं सन्यासी आदि भी हिरण्यकश्यप जैसे भयानक हैं। उनका चित्र तुमने दिखाया है। जिसको अम्बरियाँ(आम) जाकर लगाते हैं। पत्थर नहीं मारते हैं। अम्बरी लगाते हैं। मंदिर में पत्थर कैसे मारेंगे। मारना तो पत्थर चाहिए; परन्तु आमदनी कैसे हो तो अम्बरियाँ जाकर लगाते हैं। अम्बरियों का ढेर हो जाता है। फिर इकट्ठे कर बेच देते हैं। रावण को भी जला देते हैं। रावण की सारी सेना है ना। पत्थर लगाने से डैमेज हो जावेंगे। मूर्ति इसलिए अम्बरी लगाते हैं। फिर इकट्ठे कर बेच

देते हैं। श्रीनाथ जगतनाथ के मंदिर तुमने शायद नहीं देखी है। दोनों में मूर्ति एक ही है। सिर्फ नाम भिन्न2 रख अलग2 अनेक मंदिर बना दिये हैं। श्रीनाथ के मंदिर में माल बहुत बनाते हैं। भारत बहुत शाहुकार था, घी की नदियाँ बहती थीं। श्रीनाथ में भी घी की नदियाँ बहती हैं। खूब माल बनता है। फिर दुकान पर रख बेचते हैं। बाबा सभी बातों का अनुभवी है। चक्र लगाये हैं इन सभी तीर्थों पर। तीर्थ भी बहुत किये हैं। गुरु भी बहुत किये हैं। बहुत हठयोग आदि सिखलाते थे। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में तीर्थ यात्रा आदि करते मंदिर बनाते तुमने सभी पैसे ही खलास कर दी है। अभी बैगर बन भीख मांग रहे हो। स्वर्ग में तुम भारतवासी कितने धनवान थे। इन ल0ना0 का राज्य था ना। फिर वह कहाँ गये। 84 जन्म तो जरूर लेंगे ना। कृष्ण के लिए तुम बताते हो 84 जन्म लिये हैं तो बिगड़ पड़ते हैं। कृष्ण भगवान के लिए तुम कहते हो 84 जन्म। बाप कहते हैं यह नम्बरवन गोरा था। फिर 84 पुनर्जन्म लेते2 सांवरा बना है। तत् त्वम्। तमोप्रधान से फिर सतो0 कौन बनावेंगे? बाप को ही आकर सतोप्रधान बनाना है। चित्र कितना सहज बना हुआ है। कोई को भी तुम समझा सकते हो। यहाँ है नर्क, वहाँ है स्वर्ग। अभी है संगमयुग। जो तुम ब्राह्मण राजयोग सीखते हो। फिर तुम ही राजाई में जाते हो। बाकी सभी शान्तिधाम चले जावेंगे। ऊपर में लिखा हुआ है। ब्रह्मा द्वारा एक धर्म की स्थापना। शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश। यह सभी थे नहीं। फिर न होंगे। सतयुग में सिवाय देवी–देवताओं के दूसरे कोई धर्म थे नहीं। यह भी कोई की बुद्धि में नहीं आता है। इसलिए बाबा ने यह नक्शे आदि बनाये हैं। चित्रों के समाने जाकर खड़ा करो। कितना क्लीयर है। तुम बच्चे जानते हो पहले2 आदि सनातन देवी–देवताएँ ही थे। भारत का बहुत छोटा शोभनिक बनाना चाहिए स्वर्ग का चित्र। इस स्वर्ग में देवी देवताएँ राज्य करते थे। भारत फलाने सम्वत से फलाने सम्वत। दूसरा कोई धर्म नहीं था। यह तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। पहले2 भारत यह (स्वर्ग) था। बाकी सभी धर्म पीछे आये हैं। यह भी तुम समझा सकते हो। और कोई जानते ही नहीं हैं। देवताओं में भी यह नॉलेज नहीं होगी। स्टुडेन्ट पढ़कर पास करते हैं, नॉलेज बुद्धि में बैठ जाती है। पढ़ाई से पद मिल गया पढ़ने की दरकार ही नहीं। पढ़ाई खत्म हो जाती है। तुमको भी अभी बाप पढ़ाते हैं। फिर तुम देवता पद पा लेते हो। वहाँ इस पढ़ाई की दरकार ही नहीं। बाप कहते हैं मैं ही यह पढ़ाई पढ़ाता हूँ और पढ़ाऊँगा। भक्तिमार्ग में तुमने कितना बारी गीता पढ़ी होगी। पहले तो जरूर अपना शरीर ही पढ़ती होगी। पहले2 तुमने पूजा शुरू की ना। तो बच्चों को कितना मीठा गुल2 बनना चाहिए। मीठे2 ज्ञान की बातें सुनकर फिर औरों को सुनाना चाहिए। यह तो कल्प2 तुम करते हो। बाप समझाते रहते हैं। आँखें जो धोखा देती हैं उस पर ही गुस्सा करो। (सुरदास का मिसाल है ना) अपन को थप्पर मारना चाहिए। यह क्या हमारी आँखों ने धोखा क्यों दिया। ऐसी2 विकर्म की बातें क्यों आई। बाबा भक्ति में जब बैठते थे तो पूजा करते2 ध्यान बाहर धंधे आदि तरफ चला जाता था तो अपन को चुन्डरी पहनते थे। हमारी बुद्धि क्यों भागी। बाप भी कहते हैं क्रिमनल आई धोखा देवे तो लगाओ थप्पर। तब सुधार होगा। इसलिए बाबा कहते हैं रोज अपना चार्ट रखो। श्रीमत पर अगर न चलेंगे तो फिर तुमको पछताना पड़ेगा। और यह युनिवर्सिटी खोलते जाओ। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि यहाँ आकर पैसे रखो। नहीं। रूहानी युनिवर्सिटी खोलो। बाबा डायरेक्शन देते रहेंगे। सर्विस लायक बनना चाहिए। पैसे हैं तो म्युजियम खोलो। हिम्मते बच्चे मददे बाप। दिल साफ तो मुराद हासिल। एक को ही तुम याद करो तो विश्व के मालिक बन जावेंगे। इस समय पुरु0 पूरा करना है। अभी फेल हुए तो कब भी राजा–रानी वा महाराजा महारानी नहीं बन सकते। इसलिए अच्छी रीत पुरुषार्थ करो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति बापदादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।